विचार बिन्दु

ऐश्वर्य उपाधि में नहीं बल्कि इस चेतना में है कि हम उसके योग्य हैं। –अरस्तु

सरकारी कार्यालय - जनता की दृष्टि में

मैं समय-समय पर इसी संपादकीय स्तंभ में सीधे जनता से संपर्क वाले विभागों की कार्यशैली और व्यवहार के बारे में लिखता रहा हूं। जनता का कार्य समय पर और चक्कर लगाए बिना करते रहने की आवश्यकता पर बल देता रहा हूँ। ऐसा करने हेतु विभिन्न प्रकार के सुझाव भी समय-समय पर इसी स्तंभ के माध्यम से दिए गए हैं ।

इसी परिप्रेक्ष्य में यह आलेख, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल इंडिया के राजस्थान चैप्टर के माध्यम से किए गए सर्वे के परिणामों से पाठकों और सरकार को अवगत कराने के उद्देश्य से लिखा गया है। यह इस धारणा को जांचने का भी एक प्रयास था कि विभागों में पारदर्शिता की कमी कैसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है।

हाल ही में ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल इंडिया के राजस्थान चैप्टर द्वारा, जयपुर स्थित जनता से सीधे संपर्क वाले कार्यालयों में विभिन्न कामों से आने वाले सामान्य लोगों का अनुभव क्या रहा है, यह पता करने हेतु एक सर्वेक्षण किया गया। यह उल्लेखनीय है कि ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल, बर्लिन स्थित एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है जो प्रतिवर्ष विभिन्न राष्ट्रों में भ्रष्टाचार के स्तर का सर्वेक्षण करा के रैंकिंग जारी करती है। कुछ वर्षों से भारत का स्थान लगभग 100 के आसपास रहा है ।

इस सर्वेक्षण के लिए राजस्थान चैप्टर द्वारा जिन प्रमुख सरकारी कार्यालयों का सर्वेक्षण हेतु चयन किया गया वे हैं - नगर निगम लाल कोठी, जयपुर विकास प्राधिकरण, आरटीओ ऑफिस झालाना, कलेक्ट्रेट रजिस्ट्रेशन ऑफिस और कलेक्ट्रेट कार्यालय।

यह सर्वे उन व्यक्तियों से किया गया जो इन कार्यालयों से बाहर निकल रहे थे। यह सर्वे जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट के विद्यार्थियों के माध्यम से किया गया। इसके लिए एक प्रश्नावली तैयार की गई। कार्यालयों से बाहर निकलने वाले नागरिकों से बात करने के लिए एवं कार्यालय में उनके अनुभव को ज्ञात करने हेतु पांच-पांच व्यक्तियों के पांच दल बनाए गए। जिन व्यक्तियों का सर्वेक्षण के लिए चयन किया गया वे प्रबंधन के विद्यार्थी थे। इन्हें अच्छी तरह इस बारे में पहले ब्रीफ किया गया था । उनसे यह अपेक्षा की गई थी कि वे उन्हीं से बात करें जो इस बारे में बात करना चाहें । उन्हें आश्वस्त किया जाए कि उनके द्वारा दी गई जानकारी का कोई नुकसान उन्हें नहीं होगा, न ही उनकी पहचान को सार्वजनिक किया जाएगा । इन विद्यार्थियों को एक प्रश्नावली दी गई, जिसमें मुख्य रूप से पूछे जाने वाले निम्न प्रश्न थे:–

आप इस कार्यालय में किस कार्य से आए थे?
आपको अपने कार्य हेतु कितनी बार आना पड़ा?
क्या आपका कार्य पूरा हो गया है?
क्या आपसे किसी ने रिश्वत की मांग की?
क्या आपको अपने काम के लिए किसी एजेंट के पास भेजा गया?

आपके साथ कार्यालय में किस प्रकार का व्यवहार था? क्या आप इस कार्यालय में प्राप्त अनुभव से पूर्णतया संतुष्ट हैं, संतुष्ट हैं, असंतुष्ट हैं अथवा नितांत असंतुष्ट हैं?

यह सर्वेक्षण एक दिन में 5-6 घंटे में किया गया ।

इसमें कुल 25 विद्यार्थी सम्मिलित थे जिन में लगभग आधी छात्राएं थीं। इन लोगों के द्वारा किए गए सर्वेक्षण के आधार पर जो जानकारी प्राप्त हुई इसका संक्षिप्त विवरण कार्यालय वार निम्न प्रकार है :–

1.नगर निगम कार्यालय, लाल कोठी, जयपुर

कुल 57 व्यक्तियों से चर्चा की गई। 65% व्यक्तियों ने यह बताया कि वे नगर निगम के कार्य से असंतुष्ट अथवा अति असंतुष्ट थे। 33% ने कहा कि वे सन्तुष्ट थे है और 2% ने कहा कि वे बहुत संतुष्ट थे। इस कार्यालय में आने वाले व्यक्तियों में से अधिकांश का कार्य कोई प्रमाण पत्र जैसे जन्म, मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाना, आधार कार्ड से संबंधित अथवा भूमि की समस्या के बारे में था। 42% व्यक्तियों ने बताया कि उन्हें नगर निगम के 5 से लेकर 30 बार तक चक्कर लगाने पड़े। जिन व्यक्तियों से बात की गई, उनमें से 80% का काम अभी तक नगर निगम में लंबित था।

इस कार्यालय मैं आने वाले 80% व्यक्तियों ने कहा कि उनसे कोई रिश्वत नहीं मांगी गई, 20‌ॾ से 15000 तक की रिश्वत ली गई।

2. जयपुर विकास प्राधिकरण

यहां अधिकांश व्यक्ति रजिस्ट्रेशन के लिए, भूमि संबंधी विवाद के लिए तथा शिकायत लेकर आए थे। इनमें से 65% ऐसे थे जो अपने अनुभव से असंतुष्ट अथवा बहुत ही अधिक असंतुष्ट थे। केवल 35% ऐसे थे जो अनुभव से संतुष्ट थे। लगभग 28% व्यक्तियों का काम न्यूनतम 6 माह से अधिक समय से लंबित था। जेडीए में अपने काम के लिए 32% लोगों को पांच बार, 7% लोगों को 10 बार और 9% लोगों को 30 बार तक आना पड़ा था। जेडीए में 21%लोगों ने कहा कि उनसे रिश्वत की मांग की गई, जबकि 79%लोगों ने कहा कि उनसे रिश्वत की मांग नहीं की गई।

3. आर टीओ झालाना

यह सर्वे हालांकि एक ही दिन में किया गया और कुल 347 व्यक्तियों से ही किया गया, किंतु इससे यह संकेत तो मिलता है कि जनता को इन पांच कार्यालयों से काम कराने में कितनी कठिनाई होती है। परिवहन कार्यालय में शायद अधिकांश लोग एजेंट के माध्यम से काम कराते हैं अतः वहां पर संतुष्टि का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। प्रश्न फिर भी यही है कि क्यों एजेंट के पास जाने की आवश्यकता होती है ?

इस कार्यालय के संबंध में कुल 71 व्यक्तियों से बात की गई। यहां आने वाले लोगों में 50% वाहन के स्थानांतरण के लिए, 30% ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने के लिए एवं शेष जप्त वाहन को छुड़ाने एवं वाहन के पंजीकरण के लिए आए थे। इस कार्यालय के अनुभव से 57%व्यक्ति संतुष्ट थे जब कि 43% असंतुष्ट थे। जिन व्यक्तियों से बात की गई उनमें से 70% का काम लंबित था और 30% का हो चुका था। आरटीओ में 70% व्यक्तियों का काम 6 महीने या उससे अधिक समय से लंबित था। लगभग 51% व्यक्तियों को पांच बार तक एवं 18% को 30 बार तक कार्यालय के चक्कर लगाना पड़े थे। 21% ने कहा कि उनसे रिश्वत मांगी गई जबकि 79% ने कहा कि उनसे रिश्वत की मांग नहीं की गई।

4. कलेक्ट्रेट कार्यालय (रजिस्ट्रेशन)

यहां कुल 78 व्यक्तियों से बात की गई । इनमें से 58% व्यक्ति असंतुष्ट थे जबकि 12% अति असंतुष्ट थे। इसके विपरीत 30% ऐसे थे जो या तो संतुष्ट अथवा बहुत ही संतुष्ट थे। जिनसे बात की गई उनमें से 38%का काम हो चुका था एवं 62% का काम लंबित था। जिनका काम लंबित था उनमें से 90% का काम 1 महीने से कम समय से एवं शेष का 6 महीने से या उसके अधिक समय से पेंडिंग था। 43% व्यक्तियों का काम एक बार में एवं 50% व्यक्तियों का काम 5 से कम बार में पूरा हो चुका था। 90% से कोई रिश्वत नहीं मांगी गई जबकि 10% से 15000 रुपए तक की रिश्वत की मांग की गई।

5. कलेक्ट्रेट कार्यालय

यहां से निकलने वाले कुल 84 व्यक्तियों से बात की गई। यहां आने वालों में 81% छात्रवृत्ति के लिए आए थे जबकि शेष भूमि विवाद अथवा वृद्धावस्था पेंशन हेतु आए थे। केवल तीन प्रतिशत ने कहा कि उनसे रिश्वत की मांग की गई, शेष से किसी प्रकार की रिश्वत की मांग नहीं की गई थी। यहां आने वाले लोगों में से 44% का काम एक बार में और 50% का पांच बार से कम समय में हो गया था। इसके बावजूद केवल 30% लोग इस कार्यालय के अनुभव से संतुष्ट थे, जबकि 70% संतुष्ट नहीं थे। इनमें भी 12% तो बहुत ही असंतुष्ट थे। यहां आने वालों में 46% का काम हो चुका था और 54 प्रतिशत का लंबित था।

निष्कर्ष :–

उपरोक्त सभी कार्यालयों से कुल मिलाकर 50% से अधिक लोग असंतुष्ट थे। असंतुष्टि का स्तर कलेक्ट्रेट के पंजीयन कार्यालय और नगर निगम के कार्यालय में अधिक था।

सर्वेक्षित लोगों में से 65% ने कहा कि उनका काम उस दिन, 6 महीने से लंबित था।

जहां रिश्वत की मांग केवल 15% प्रकरण में की गई, वहीं 17% प्रकरणों में किसी-किसी बिचौलिए के पास भेजा गया।

सभी कार्यालयों में काम के लिए बार-बार चक्कर लगाने की आवश्यकता लगभग सभी को पड़ी ।

यह सर्वे हालांकि एक ही दिन में किया गया और कुल 347 व्यक्तियों से ही किया गया, किंतु इससे यह संकेत तो मिलता है कि जनता को इन पांच कार्यालयों से काम कराने में कितनी कठिनाई होती है। परिवहन कार्यालय में शायद अधिकांश लोग एजेंट के माध्यम से काम कराते हैं अत: वहां पर संतुष्टि का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया । प्रश्न फिर भी यही है कि क्यों एजेंट के पास जाने की आवश्यकता होती है?

हो सकता है, कुछ विभाग, सर्वेक्षण के परिणामों को स्वीकार न करें, किंतु यह प्रबंधन के विद्यार्थियों के द्वारा बिना किसी लाग लपेट के किया गया है जिसे न मानने का कोई कारण नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि जिन कारणों से काम बहुत विलंब से होता है उनके मूल में जाया जाए। इससे यह पता लगे कि प्रक्रियाओं को सरलीकृत करने और स्पष्ट बनाने तथा प्रार्थना पत्रों का समयबद्ध निष्पादन करने की आवश्यकता है । जो भी लोग इसे अटकाने का काम करें अथवा एजेंट के पास भेजने का काम करें, उनकी जवाबदेही तय की जाकर उन्हें समुचित दंड दिया जाए। तब संभव है, लोगों के काम अधिक आसानी से हो पाएंगे। सरकार की छवि सामान्यतया उन्हीं विभागों के द्वारा बनाई या बिगाड़ी जाती है, जहां सामान्य जनता का संपर्क अधिक होता है। संवेदनशीलता का अभाव सामान्यत: सभी सरकारी कार्यालयों में देखा गया है ।

आशा की जाती है कि ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल, राजस्थान चैप्टर द्वारा किए गए सर्वे के परिणाम और निष्कर्ष पर सरकार विचार करेगी और इन कार्यालयों में सुधार हेतु आवश्यक कदम उठाएगी। यह लिखना आवश्यक है कि सर्वे के आधार पर जो निष्कर्ष निकला है वह प्रचलित जन धारणा की तुलना में बेहतर है। उन कार्यालय का भी अध्ययन किया जाना चाहिए जहां संतुष्टि का स्तर बेहतर है। एक सामान्य निष्कर्ष तो यही निकलता है कि जहां पर भी पारदर्शिता का अभाव होता है वहां जवाबदेही तय करना कठिन होता है और वही भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होता है। सभी कार्यालयों की कार्य निष्पादन की प्रक्रिया को न केवल सरल एवं स्पष्ट किया जाए अपितु उसे सार्वजनिक भी किया जाकर सर्व सुलभ करवाया जाए । तब ही बिचौलियों का दखल इनमें कम हो पाएगा और सीधे नागरिक इन कार्यालय से अपने काम करवा पाने में सफल हो पाएंगे।

हालांकि यह सर्वे बहुत छोटे स्तर पर था और बहुत ही कम कार्यालयों का किया गया, इस प्रकार के सर्वे सामान्य जनता के हित में, बड़े स्तर पर और अनेक कार्यालयों में समय-समय पर किए जाने की आवश्यकता है ताकि तुलनात्मक रूप से होने वाले सुधार का भी समय समय पर अध्ययन किया जा कर आवश्यक कदम सरकार द्वारा उठाए जा सकें ।

–अतिथि सम्पादक,
राजेंद्र भाणावत, पूर्व आई ए एस,
उपाध्यक्ष, ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल इंडिया, राजस्थान चैप्टर

भक्तिकाल के क्रांतिकारी समाज सुधारक "संत कबीर"

डॉ. जे.के. गर्ग

अनेको मान्यताओं के अनुसार काशी के एक जुल्लाह नीरू अपनी बीबी नीमा का गोना कराकर लहरतारा तालाब से होते हुए घर आ रहे थे तो उसकी बीबी नीमा को प्यास लगने लगी तब दोनों तालाब पर पानी पीने तब उन्होंने एक टोकरी में फूल-पत्ते की शय्या पर एक नवजात शिशु को देखा। नीरू-नीमा उस शिशु को उठाकर अपने घर ले आये और उसका लालन-पालन करने लग गये। वही बालक कबीर के नाम से प्रख्यात हुआ। इस प्रकार कबीर साहेब का जन्म-स्थान काशी है। कुछ लोगों का विचार है कि नीरू-नीमा को अपने गौना के समय नहीं, किन्तु उसके कई वर्षों के बाद लहरतारा पर बालक को देखा था। सवाल उत्पन्न होता है कि शिशु लहरतारा तालाब पर कहाँ से आया? इस बारे में मान्यता है कि एक विधवा या कुमारी ब्राह्मणी की कोख से यह शिशु पैदा हुआ था वो समाज से अपमानित होने के भय से नवजात बालक को लहरतारा तालाब पर छोड़ गयी थी। इस तरह से कबीर जन्म से हिन्दू थे किन्तु उनका लालन-पालन मुस्लिम परिवार के अंदर हुआ था।

बालक कबीर की शादी बचपन में ही कर दी थी। कबीर दास जी की पत्नी का नाम लोई था कबीर दास जी के एक पुत्र और एक पुत्री भी थी पुत्र का नाम कमाल था और पुत्री का नाम कमाली था यह उनकी रचनाओं द्वारा प्रमाणित होता है। मान्यताओं के अनुसार सद्गुरु कबीर का जन्म विक्रमी संवत 1456 की जेष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को काशी में हुआ था। कबीर पंच तत्वों में विलीन माघ शुक्ल एकादशी संवत् 1575 को मगहर में हुए थे। कबीर साहेब ने 120 वर्ष तक सांप्रदायिक सद्भाव का संदेश दिया था। समस्त देश के अंदर 11 जून 2025 को संत कब्बर का जन्मोत्सव हर्ष उल्लास के साथ मनाया जायगा।

कबीर दास जी काशी के गंगा घाट के किनारे रहा करते थे ऐसा कहा जाता है कि कबीर दास जी गंगा घाट के किनारे बैठे हुए थे तभी वहां पर भक्गुति काल के प्रुरमुख गुरु रामानंद जी स्नान कर रहे थे रामानंद की नजर कबीर दास पर पड़ी जिसके कारण कबीर के मुंह से राम शब्द निकल पड़ा इसी राम शब्द को सुनकर गुरु रामानंद अत्यधिक प्रसन्न हुए तभी से रामानंद ने कबीर दास जी को अपना शिष्य बना लिया। उन्हें शिक्षा दी इस प्रकार कबीर दास जी के गुरु श्री रामानंद जी थे गुरु रामानंद जी ने कबीर दास को ज्ञान और भक्ति के दर्शन कराएं तथा उनके ज्ञान को विकसित करने में गुरु रामानंद जी ने भूमिका निभाई। कबीर दास जीसंत की साथ साथ दार्शनिककवि और समाज सुधारक भी थे। कबीर दास जी के मुख्य रचनाएंक रचनाएं (1) कबीर की साखियां (2) सबद (3) रमणी हैं। कबीर दास जी की सर्वोत्तम रचनाओं में उन पुस्तक सबद भी है है इस रचना में कबीर दास जी ने प्रेम और अंतरंग साधना का वर्णन खूबसूरती से किया गया है। संत कबीर की साखियां में ज्यादातर कबीर दास जी की शिक्षाओं का उल्लेख मिलता है और उसके सिद्धांतों का वर्णन इस रचना में बखूबी से किया गया है। कबीर दास जी ने अपना सारा जीवन काशी में रहकर ही लोगों के कल्याण के लिए और सामाजिक बुराइयों और कुरुतियों का अंत करने के लिए लगा दिया मृत्यु के समय कबीरदास जी मगहर चले गए जो कि उत्तर प्रदेश में पड़ता है ऐसा कहा जाता है कि उस समय मगहर में रहने वाले लोगों को नर्क की प्राप्ति होती थी कबीर दास जी ने इसी अंधविश्वास को झूठा साबित करने के लिए मगहर चले गए कबीर दास जी की मृत्यु के समय मगहर चले गए ताकि समाज में फैली हुई अंधविश्वास को जड़ से रोका जा सके।

कबीर की निष्पक्षता, दो टूक कहने का ढंग और बड़े-बड़े रहस्यात्मक गुत्थियों को सरल-सहज उपमाओं के द्वारा व्यक्त करने की शैली की वजह कबीर को भक्ति काल के संतों में प्रमुख संत माना गया है। कबीर जी का मानना है कि जीवात्मा कह रही है कि 'तू है' 'तू है' कहते-कहते मेरा अहंकार समाप्त हो गया। इस तरह भगवान पर न्यौछावर होते-होते मैं पूर्णतया समर्पित हो गई। अब तो जिधर देखती हूँ उधर तू ही दिखाई देता है। संत कबीर कहा करते थे कि मेरे पास अपना कुछ भी नहीं है। मेरा यश, मेरी धन-संपत्ति, मेरी शारीरिक-मानसिक शक्ति, सब कुछ तुम्हारी ही है। जब मेरा कुछ भी नहीं है तो उसके प्रति ममता कैसी? तेरी दी हुई वस्तुओं को तुम्हें समर्पित करते हुए मेरी क्या हानि है? इसमें मेरा अपना लगता ही क्या है?

इसीलिए उन्होंने बतलाया कि मेंरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा। तेरा तुझकौं सौंपता, क्या लागै है मेरा।

कबीरजी ने उपदेश दिया की यह माया बड़ी पापिन है। यह प्राणियों को परमात्मा से विमुख कर देती है तथा उनके मुख पर दुर्बुद्धि की कुंडी लगा देती है और राम-नाम का जप नहीं करने देती। अत: संत कहते है की कबीरमाया पापणीं, हरि सूँ करे हराम। मुखि कड़ियाली कुमति की, कहण न देई राम।। यह माया बड़ी पापिन है। यह प्राणियों को परमात्मा से विमुख कर देती है तथा उनके मुख पर दुर्बुद्धि की कुंडी लगा देती है और राम-नाम का जप नहीं करने देती।

सारे संसारिक लोग पुस्तक पढ़ते-पढ़ते मर गए कोई भी पंडित (वास्तविक ज्ञान रखने वाला) नहीं हो सका। परंतु जो अपने प्रिय परमात्मा को सुमिरन करता है अथवा अक्षर जपता है (या प्रेम का एक अक्षर पढ़ता है) वही सच्चा ज्ञानी होता है। वही परम तत्त्व का सच्चा पारखी होता है।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
एकै आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होइ।। आवन जावन व्है रहा, ज्यौं कीड़ी का नाल।

बेटा पैदा होने पर हे प्राणी थाली बजाकर इतनी प्रसन्नता क्यों प्रकट करते हो? जीव तो चौरासी लाख योनियों में वैसे ही आता जाता रहता है जैसे जल से युक्त नाले में कीड़े आते-जाते रहते हैं। कीड़े, यह तुम्हारी मूर्खता है कि तुम पहले जाति पूछते हो, फिर उसके हाथ का पानी पीते हो। तुम जिस मिट्टी के घर में बैठे हो उसमें सारी सृष्टि समाई हुई है। छप्पन करोड़ यादव और अठासी हज़ार मुनि यहाँ डूब गए और क़दम-क़दम पर गड़े हुए पैग़म्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका ख़ून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीज़ें) बहकर आता है और जानवर और इंसान सब इसमें सड़ते हैं। जब हड्डी और गूदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मानते हैं। हे पाँड़े, वेद और क़ुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते हैं। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मग्रंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े रहे, वहाँ कबीर सारी परंपराओं से हटकर सबके सार-तत्व को स्वीकार करते हुए पक्षपात नहि बचन, सबहिं के हित की बातें कहते रहे, वह भी सरे बाजार चौराहे पर खड़े होकर एक अकेला और निद्वन्द्वी।

उनकी सत्यनिष्ठा एवं निष्पक्षता ने उनके व्यक्तित्व को ऐसा महनीय मोहक और चुम्बकीय बना दिया था कि जो उनके पास गया, उनका ही होकर रह गया।

कबीरदेव ऐसे महत्तम संत हैं जो केवल भारतीय परंपरा ही नहीं, अपितु विश्व मानवता के मूल उत्स को पकड़ते हैं और सबको वहीं ले जाना चाहते हैं, जहाँ पहुँचकर वर्ण, वर्ग एवं मत-पंथगत सारे भेदभाव निस्सार हो जाते हैं और जहाँ से प्रेम की निर्मल, स्निग्ध और शीतल धारा प्रवाहित होकर सबको सराबोर कर देती है। पूरी मानवता को आत्मसात करने वाली प्रेम की निर्मल धारा में कबीरदेव ऐसे चौराहे पर खड़े हैं, जहाँ सारे रास्ते आकर मिलते हैं। यह कहना अतिष्योक्तेकति नहीं होगी कि कबीर में पूरी मानवता का सार समाया हुआ है। कबीर पहले भारतवासी हैं, जिन्होंने सारी मानव जाति के लिए एक सामान्य धर्म का निर्भीकता के साथ उपदेश दिया। कबीर साहेब की वाणियों में आये हुए आध्यात्मिक रूपकों के रहस्य को न समझकर तथा उनका मूल रहस्य खोल कर महान काम किया है। विद्वानों ने उनको गृहस्थ सिद्ध करने की चेष्टा की है जो सर्वथा अनर्थ है।

कुछ विद्वान कबीर साहेब को आजीवन गृहस्थ बताते हैं और कुछ बताते हैं कि वे पहले गृहस्थ थे किन्तु पीछे से विरक्त हो गये थे। यह सर्वविदित है कि कबीर साहेब देश विदेशे हौ फिरा होते हुए भी जीवात्मा कह रही है कि 'तू है' 'तू है' कहते-कहते मेरा अहंकार समाप्त हो गया। इस तरह भगवान पर न्यौछावर होते-होते मैं पूर्णतया समर्पित हो गई। अब तो जिधर देखती हूँ उधर तू ही दिखाई देता है।

तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझ मैं रही
संत कबीर के चरणो मैं कोटि कोटि नमन्।

–डॉ. जे.के. गर्ग,
पूर्ण संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा

कृत्रिम बुद्धिमता क्रांति : विकसित भारत का रोडमैप

डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत

भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा एक महत्वकांक्षी दस्तावेज "इंडिया एआई क्रांति: विकसित भारत के लिए रोडमैप" जारी किया गया है जो भारत को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में वैश्विक नेता बनाने की दिशा में एक रणनीतिक खाका प्रस्तुत करता है। यह मिशन न केवल तकनीकी नवाचार और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित है, बल्कि रोजगार सृजन के क्षेत्र में भी व्यापक संभावनाएँ प्रस्तुत करता है। इस रिपोर्ट के रोजगार सृजन से संबंधित डेटा और इसके प्रभावों का विश्लेषण है साथ ही यह विश्लेषण भी है कि अगले दशक में यह भारत के आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य को कैसे प्रभावित कर सकता है।

इंडिया एआई मिशन 2024 में 10,372 करोड़ के बजट के साथ स्वीकृत मिशन है जो अगले पांच वर्षों में भारत के एआई पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने का लक्ष्य रखता है। यह मिशन सात प्रमुख क्षेत्रों 1. कम्प्यूटिंग/एआई बुनियादी ढांचा , 2. डेटा, 3. प्रतिभा, 4. अनुसंधान और विकास, 5. पूंजी, 6.एल्गोरिदम, और 7.अनुप्रयोग पर केंद्रित है । इसके लिए डिजिटल इंडिया कॉरपोरेशन के तहत एक स्वतंत्र व्यवसाय इकाई, 'इंडिया एआई' स्थापित की है।

इस मिशन का उद्देश्य भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाना और डेटा-आधारित शासन को बढ़ावा देना है। रिपोर्ट के अनुसार, एआई भारत की अर्थव्यवस्था में 2035 तक 967 बिलियन डॉलर का योगदान दे सकता है और 2025 तक भारत के 5 ट्रिलियन डॉलर जीडीपी लक्ष्य में 450-500 बिलियन डॉलर का योगदान दे सकता है, जो कुल जीडीपी का 10 फीसदी है। यह आर्थिक वृद्धि रोजगार सृजन के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करेगी, विशेष रूप से तकनीकी और डेटा संचालित क्षेत्रों में।

इंडिया एआई मिशन और संबंधित रिपोर्टें रोजगार सृजन की अपार संभावनाओं की ओर इशारा करती हैं। विश्व आर्थिक मंच की फ्यूचर ऑफ जॉब्स रिपोर्ट 2025 के अनुसार, भारत में एआई और संबंधित प्रौद्योगिकियों के बढ़ते उपयोग से तकनीकी क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। लगभग 67 फीसदी भारतीय कंपनियाँ विविध प्रतिभा पूल से कर्मचारियों की भर्ती करने की योजना बना रही हैं, जो वैश्विक औसत 47 प्रतिशत से कहीं अधिक है। ईवाई इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार 2030 तक जेनेरेटिव एआई भारत में 38 मिलियन नौकरियों को प्रभावित कर सकती है, जिससे अर्थव्यवस्था में 2.61 फीसदी की उत्पादकता वृद्धि होगी। असंगठित क्षेत्र में जेन ए आई को अपनाने से अतिरिक्त 2.82 फीसदी उत्पादकता वृद्धि हो सकती है।

इंडियन एक्सप्रेस का अनुमान है कि 2025 तक एआई के क्षेत्र में लगभग 20 मिलियन नौकरियाँ सृजित हो सकती हैं, जो चिकित्सा, कृषि, मौसम पूर्वानुमान, शहरी नियोजन, और अंतरिक्ष अनुसंधान जैसे विविध क्षेत्रों में होंगी।

एआई और मशीन लर्निंग विशेषज्ञ, डेटा वैज्ञानिक, सूचना और सुरक्षा विश्लेषक, और बिग डेटा विशेषज्ञ जैसे नए रोजगार क्षेत्र उभर रहे हैं। सेवा क्षेत्र, विशेष रूप से डिजिटल सेवाएँ, वित्तीय सेवाएँ, स्वास्थ्य सेवाएँ, और ई-कॉमर्स 2030 तक 100 मिलियन से अधिक नौकरियाँ सृजित करने की क्षमता रखते हैं।भारत में सेमीकंडक्टर और क्वांटम एन्क्रिप्शन जैसे क्षेत्रों में निवेश बढ़ रहा है, जिससे तकनीकी नौकरियों में वृद्धि होगी। 35 फीसदी भारतीय नियोक्ता सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकियों को अपनाने की योजना बना रहे हैं, जो वैश्विक औसत से अधिक है।

इंडिया एआई मिशन के तहत 'फ्यूचर स्किल्स प्राइम' और 'यूवाएआई: यूथ फॉर उन्नित एंड विकास विद एआई' जैसे कार्यक्रम शुरू किए गए हैं, जो युवाओं को एआई-संबंधित कौशल प्रदान करने पर केंद्रित हैं।

वर्ल्ड इकोनोमिक फोर्म की रिपोर्ट के अनुसार, 2030 तक भारत के 63 फीसदी श्रमिकों को प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी, लेकिन 12 फीसदी को अपस्किलिंग में कठिनाई हो सकती है, जो लगभग 70 मिलियन श्रमिकों को प्रभावित कर सकता है।

मिशन समावेशी रोजगार सृजन पर जोर देता है। भारत में महिलाओं की कार्यबल भागीदारी दर लगभग 33 फीसदी है जो वैश्विक औसत 50 फीसदी से थोड़ा कम है। इंडिया एआई मिशन और संबंधित पहल ठाामीण और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को लक्षित करके विविध कार्यबल निर्माण पर ध्यान दे रही हैं। भाषाई विविधता को संबोधित करने के लिए, भाशिनी जैसे प्रोजेक्ट्स के माध्यम से 500 मिलियन डिजिटल रूप से असंबद्ध भारतीयों को वॉयस-आधारित इंटरफेस के माध्यम से सेवाएँ प्रदान करने की योजना है। रोजगार सृजन की संभावनाओं के बावजूद, कुछ चुनौतियाँ हैं जो इस प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती हैं।

डब्ल्यूईएफ की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में तकनीकी प्रतिभा की कमी नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने में बाधा डाल रही है। इकोनॉमिक सर्वे 2024-25 में चेतावनी दी गई है कि एआई के कारण निम्न-कौशल वाली नौकरियाँ, जैसे प्रशासनिक और डेटा प्रविष्टि भूमिकाएँ, खतरे में पड़ सकती हैं। इसके अलावा एआई और डीपटेक में दीर्घकालिक निवेश की कमी एक चुनौती है।

ग्रामीण और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए समावेशी कौशल प्रशिक्षण चुनौती से निपटने में कारगर हो सकता है साथ ही इंडिया डेटासेट्स प्रोग्राम जैसे प्लेटफॉर्म डेटा की सटीकता और गोपनीयता सुनिश्चित करेंगे। सरकार और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग से तकनीकी बुनियादी ढांचे को मजबूत किया जा रहा है।

कुल मिलाकर इंडिया एआई मिशन भारत के लिए एक परिवर्तनकारी अवसर प्रस्तुत करता है, जो न केवल आर्थिक विकास को गति देगा, बल्कि रोजगार सृजन के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी बदलाव लाएगा। 2030 तक 38 मिलियन नौकरियों को प्रभावित करने और 2025 तक 20 मिलियन नई नौकरियाँ सृजित करने की संभावना के साथ, यह मिशन भारत को वैश्विक एआई हब बनाने की दिशा में अग्रसर है। हालांकि, कौशल विकास, समावेशी नीतियों और दीर्घकालिक निवेश की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि एआई का लाभ सभी वर्गों तक पहुंचे। भारत सरकार की यह पहल न केवल तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देगी, बल्कि एक समावेशी और सतत आर्थिक भविष्य का निर्माण भी करेगी।

- डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत,
(लेखक स्वतंत्र चिंतक है।)

राशिफल मंगलवार 10 जून, 2025

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, अनुराधो नक्षत्र सायं 6:02 तक, सिद्ध योग दिन 1:44 तक, वणिज करण दिन 11:36 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कर्क, बुध-मिथुन, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग सायं 6:02 तक है। राजयोग दिन 11:36 से सायं 6:02 तक है। भद्रा दिन 11:36 से रात्रि 12:25 तक है। आज बुध उदय पश्चिम में दिन 12:19 पर होगा। आज चांद पूर्णिमा व्रत, चम्पक चतुरदशी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:01 से 10:43 तक, लाभ अमृत 10:43 से 2:08 तक, शुभ 3:51 से 5:33 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:31, सूर्यास्त 7:16

मेष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। नवीन कार्यों में व्यवधान हो सकता है।

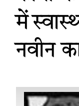

वृष

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

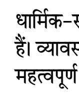

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

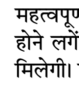

कर्क

परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

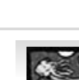

सिंह

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

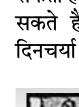

कन्या

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक सफलता से आत्मविश्वास बढ़ेगा।

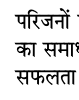

तुला

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

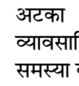

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

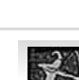

धनु

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अतिथियों का आगमन रहेगा। मन में असंतोष बना रहेगा।

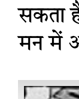

मकर

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

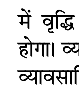

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी।

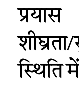

मीन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।